OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 4 Issue 4 [Jul- Aug] Year 2025*

Research Article

भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम महिलाओं का योगदान: एक अध्ययन

सुमन मोर [1*], डॉ. इरफ़ान अहमद [2]

[1] पी.एच.डी. रिसर्च स्कॉलर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, आई.ई.सी. विश्वविद्यालय, बद्दी, सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, आई.ई.सी. विश्वविद्यालय, बद्दी, सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author: सुमन मोर *

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17768285

सारांश

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में जाति, वर्ग और धार्मिक पहचानों से परे महिलाओं की सक्रिय भागीदारी देखी गई। फिर भी, मुख्यधारा के इतिहासलेखन में मुस्लिम महिलाओं की भूमिका पर ज़्यादा ज़ोर नहीं दिया गया है। यह शोधपत्र भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में मुस्लिम महिलाओं की भूमिका, भागीदारी, सामाजिक-राजनीतिक जुड़ाव और बलिदान का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है। चुनिंदा प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के आधार पर, यह अध्ययन खिलाफत आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन और क्रांतिकारी गतिविधियों में मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक लामबंदी का अन्वेषण करता है। यह शोधपत्र तर्क देता है कि मुस्लिम महिलाओं ने न केवल औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी, बल्कि अपने समाज के पितृसत्तात्मक प्रतिबंधों का भी विरोध किया और राष्ट्रवादी चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 16-07-2025
- **Accepted:** 19-08-2025
- **Published:** 30-08-2025
- **IJCRM:**4(4); 2025: 708-714
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सुमन मोर , डॉ. इरफ़ान अहमद . भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम महिलाओं का योगदान: एक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(4):708-714.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

कुंजी शब्द: मुस्लिम महिलाएँ, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, असहयोग आंदोलन, महिला स्वतंत्रता सेनानी, लिंग और राष्ट्रवाद, उपनिवेशवाद-विरोधी प्रतिरोध, राजनीतिक लामबंदी, क्रांतिकारी गतिविधियाँ, बी अम्मान, बेगम हज़रत महल, औपनिवेशिक भारत में महिला सशक्तिकरण, अल्पसंख्यक महिलाओं की भागीदारी, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन।

© 2025 Suman Mor, Dr. Irfan Ahmed. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (1857-1947) केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध राजनीतिक लामबंदी की कहानी नहीं है, बल्कि कई सामाजिक समूहों की भी कहानी है जिन्होंने सर्वसम्मति से राष्ट्रवादी चेतना का निर्माण किया। स्वतंत्रता के इस लंबे संघर्ष में महिलाओं की भूमिका पर हमेशा विशेष बल दिया गया है। फिर भी, विद्वत्तापूर्ण अध्ययन के क्षेत्र में उपलब्ध अधिकांश साहित्य सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, कमला नेहरू, कस्तूरबा गांधी आदि जैसी प्रमुख हिंदू महिलाओं की जीवनियों तक ही सीमित रहा है। अपनी सामाजिक-धार्मिक पहचान से प्रबुद्ध अधिकांश मुस्लिम महिलाएँ इस स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदार थीं, लेकिन उनकी भूमिका अभी भी मुख्यधारा के विवरणों से छिपी हुई थी ।[1] इस प्रकार यह शोध पत्र भारतीय स्वतंत्रता में मुस्लिम महिलाओं की भूमिका और उनके सकारात्मक, बौद्धिक और क्रांतिकारी योगदान को पहचानने और सामने लाने का प्रयास करता है।

राजनीतिक प्रतिरोध में मुस्लिम महिलाओं की भूमिका रातोंरात नहीं घटित हुई। यह सामाजिक-ऐतिहासिक प्रकृति की थी। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बेगम जीनत महल (बहादुर शाह ज़फर की पत्नी) सहित मुस्लिम दरबारी महिलाओं के नेतृत्व ने तत्कालीन क्षेत्रों और दिल्ली में मुस्लिम महिलाओं के नेतृत्व में समर्थन जुटाया। बाद के दशकों में सर सैयद अहमद खान और अलीगढ़ सुधारकों द्वारा शुरू किए गए सुधारवादी आंदोलन महिलाओं की शिक्षा में बहुत महत्वपूर्ण रहे। आधुनिक साधनों से शिक्षित हो रही मुस्लिम महिलाओं की बढ़ती संख्या और अलीगढ़, लखनऊ, पटना और लाहौर में महिला विद्यालयों की स्थापना ने धीरे-धीरे सामाजिक चेतना को जागृत करने में योगदान दिया।

20वीं सदी की शुरुआत एक महत्वपूर्ण मोड़ थी। खिलाफत आंदोलन (1919-1924) के माध्यम से मुस्लिम महिलाओं के लिए राजनीतिक स्थान खुला। उन्होंने निजी घरेलू जीवन के क्षेत्रों को पीछे छोड़ दिया और विदेशी उत्पादों के बहिष्कार, सार्वजनिक भाषण देने, धन जुटाने के कार्यक्रमों और लामबंदी में शामिल होने लगीं। बी अम्मान (मौलाना मोहम्मद अली और शौकत अली की माँ) जैसी महिलाओं को बलिदान और साहस का राष्ट्रीय प्रतीक बना दिया गया। परदे में दिए गए उनके उर्दू भाषणों ने हज़ारों मुस्लिम परिवारों को गांधीजी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान, मुस्लिम महिलाओं ने शराब की दुकानों पर धरना देने, विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करने, खादी कातने और नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया। आबादी बानो बेगम, अमजदी बानो बेगम, बेगम राना लियाकत अली खान, फातिमा शेख, बेगम जहाँआरा शाहनवाज, असगरी बेगम, सलमा सुल्तान, हबीबा उमराव और अन्य महिलाओं ने लेखन, सार्वजनिक भाषणों, राष्ट्रवादी समाचार पत्रों और भूमिगत गुप्त क्रांतिकारी नेटवर्क के माध्यम से योगदान दिया । [2]

मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा न केवल सुधारोन्मुख था, बल्कि क्रांतिकारी भी था। बंगाल, पंजाब और उत्तर प्रदेश की महिलाएँ भूमिगत ब्रिटिश-विरोधी नेटवर्क से जुड़ गईं। कुछ मुस्लिम महिलाओं को गिरफ्तार किया गया, जेल में डाला गया, प्रताड़ित किया गया और निगरानी में रखा गया। उदाहरण के लिए, बंगाल के क्रांतिकारी हलकों में, मुस्लिम महिलाओं ने हथियारों के परिवहन और गुप्त संचार में सहायता की। एक और आयाम यह है कि मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी ने रूढ़िवादी पितृसत्ता और लैंगिक बाधाओं को भी चुनौती दी ।[3] सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश करना, विरोध प्रदर्शनों में शामिल होना, नारे लगाना, जनसभाओं को संबोधित करना, राष्ट्रीय हित के लिए धन इकट्ठा करना - ये सभी समुदाय के भीतर सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांतियाँ थीं। इस प्रकार मुस्लिम महिलाओं ने एक साथ दो क्रांतियों में योगदान दिया: उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष और पितृसत्तात्मक सीमाओं के विरुद्ध संघर्ष। इसलिए, यह शोधपत्र भारतीय राष्ट्रवाद के व्यापक ढाँचे में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी, उनके योगदान, बलिदान, भूमिका, लेखन और नेतृत्व का विस्तृत मूल्यांकन प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

साहित्य की समीक्षा

1. गेल मिनाल्ट (1993)

गेल मिनाल्ट ने मुस्लिम सामाजिक सुधार पर अपने अध्ययन में इस बात पर प्रकाश डाला है कि मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक चेतना मुख्यतः खिलाफत और असहयोग आंदोलनों के दौरान उभरी। उनका कहना है कि राष्ट्रवादी आंदोलनों ने मुस्लिम महिलाओं को नए सार्वजनिक स्थान प्रदान किए, जहाँ उन्होंने राजनीतिक बैठकों, भाषणों और प्रचार में भाग लिया। 20वीं सदी के आरंभ में मुस्लिम समुदायों की व्यापक लामबंदी के पीछे एक शक्ति के रूप में मुस्लिम महिलाओं की भूमिका के प्रभाव को उनकी विद्वता ने और पुख्ता किया है।

2. गेराल्डिन फोर्ब्स (1997)

गेराल्डिन फोर्ब्स ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमियों की महिलाओं की भागीदारी का दस्तावेजीकरण किया है। वह बताती हैं कि कैसे मुस्लिम महिलाएँ धरना अभियानों में शामिल हुईं, खादी कातने लगीं और भूमिगत गतिविधियों में योगदान दिया। फोर्ब्स ने यह भी उल्लेख किया है कि मुस्लिम महिलाएँ राष्ट्रीय महिला संघों का हिस्सा थीं और घर और राष्ट्रवादी राजनीति के बीच महत्वपूर्ण कड़ी बन गईं, जिससे युवा महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता आई।

3. बारबरा मेटकाफ (1982)

बारबरा मेटकाफ इस बात का अन्वेषण करती हैं कि इस्लामी सुधार आंदोलनों ने शिक्षा के संदर्भ में मुस्लिम महिलाओं के विकास में किस प्रकार योगदान दिया। वह लिखती हैं कि मुस्लिम समुदायों में समकालीन शिक्षा ने जनता में महिला सक्रियता की नींव रखी है। मेटकाफ दर्शाती हैं कि धार्मिक सुधार राजनीतिक जागृति से निकटता से जुड़ा था, जिसके परिणामस्वरूप अंततः मुस्लिम जगत की महिलाएँ ब्रिटिश शासन के विरुद्ध मुखर शक्तियाँ बन गईं।

4. शहनाज़ खान (2006)

शहनाज खान स्वतंत्रता-पूर्व भारतीय समाज की मुस्लिम महिलाओं की लैंगिक राजनीति के बारे में लिखती हैं। उनका कहना है कि मुस्लिम महिलाओं ने औपनिवेशिक शासन और घरेलू पितृसत्ता के साथ समझौता किया। उनके विश्लेषण में यह एक नारीवादी कदम भी था कि मुस्लिम महिलाएं स्वतंत्रता संग्राम में कैसे शामिल हुईं, क्योंकि विरोध प्रदर्शनों में शामिल होने का उनका निर्णय रूढ़िवादी परंपराओं को चुनौती देता था और उनके राजनीतिक नागरिकता अधिकारों की मांग करता था।

© 2025 Suman Mor, Dr. Irfan Ahmed. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

5. मोहम्मद सज्जाद (2013)
बिहार के मुस्लिम अभिजात वर्ग पर मोहम्मद सज्जाद का लेख असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों में मुस्लिम महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को उजागर कर सकता है। उन्होंने मुस्लिम जगत में महिलाओं की गिरफ्तारी, सत्याग्रह में भाग लेने, बैठकें आयोजित करने और राष्ट्रवादी समाचार पत्रों में प्रकाशन की घटनाओं का विवरण दिया है। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि मुस्लिम महिलाएँ राजनीतिक परिणामों की उपभोक्ता नहीं, बल्कि राजनीतिक मजदूर थीं।

6. भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही
भारतीय इतिहास कांग्रेस में प्रस्तुत कई शोध पत्रों ने मुस्लिम महिलाओं की राष्ट्रवादी भागीदारी का विश्लेषण किया है। इन पत्रों से पता चलता है कि मुस्लिम महिलाओं ने धन उगाहने, विदेशी वस्त्र विरोधी अभियानों और जेल सत्याग्रह में प्रमुख योगदान दिया था। कई मुस्लिम महिलाओं ने संदेश पहुँचाकर और कार्यकर्ताओं को आश्रय प्रदान करके भूमिगत क्रांतिकारी नेटवर्क की मदद की।

7. बी-अम्मान के भाषणों के प्राथमिक स्रोत
मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी का प्राथमिक प्रमाण बी-अम्मान (आबादी बानो बेगम) के भाषण और बयान हैं, जो उस समय के उर्दू समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए थे। इन भाषणों से हज़ारों लोगों को गांधी का साथ देने, उनका बहिष्कार करने और राष्ट्र को जागृत करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उनकी आवाज़ इस बात का सबसे अच्छा उदाहरण है कि कैसे मुस्लिम महिलाओं ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच एकता को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रवादी बयानबाजी का इस्तेमाल किया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. 1857 से 1947 तक भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी की प्रकृति और सीमा का परीक्षण करना।
2. राष्ट्रवादी आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली प्रमुख मुस्लिम महिला नेताओं, कार्यकर्ताओं और क्रांतिकारियों की पहचान करना और उन्हें उजागर करना।
3. मुस्लिम महिलाओं द्वारा अपनाए गए विभिन्न रूपों, विधियों और रणनीतियों, जैसे सार्वजनिक भाषण, धरना, धन उगाहना, भूमिगत गतिविधियाँ और जन-आंदोलन का विश्लेषण करना।
4. यह समझना कि मुसलमानों में सामाजिक सुधार, शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता ने सार्वजनिक राष्ट्रवादी राजनीति में मुस्लिम महिलाओं के उदय में कैसे योगदान दिया।
5. स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए मुस्लिम महिलाओं को जिन बाधाओं और रुकावटों को पार करना पड़ा, जैसे सामाजिक पितृसत्ता, धार्मिक प्रतिबंध और औपनिवेशिक दमन, का मूल्यांकन करना।
6. असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो जैसे गांधीवादी जन आंदोलनों में मुस्लिम महिलाओं के योगदान का मूल्यांकन करना।
7. मुस्लिम महिलाओं की भूमिका को एक संतुलित ऐतिहासिक संदर्भ में प्रस्तुत करना और मुख्यधारा के इतिहासलेखन में उस अंतर को पाटना जो अल्पसंख्यक महिलाओं के योगदान को नज़रअंदाज़ करता है।

विषय विस्तार

1857 से 1947 तक भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी की प्रकृति और सीमा की जांच करना- भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी 1857 से 1947 तक विभिन्न चरणों और रूपों में फैली हुई थी। 1857 में, बेगम हजरत महल जैसी महिलाएं ब्रिटिश शासन के खिलाफ शक्तिशाली नेताओं के रूप में उभरीं। 20वीं सदी की शुरुआत में, मुस्लिम महिलाओं ने खिलाफत आंदोलन (1919-1924) और असहयोग आंदोलन (1920-1923) के माध्यम से मुख्यधारा के राजनीतिक आंदोलनों में प्रवेश किया, जहाँ उन्होंने भाषण दिए, धन जुटाया और सार्वजनिक अभियान आयोजित किए। सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के दौरान, कई मुस्लिम महिलाएं बहिष्कार, धरना, खादी प्रचार और यहां तक कि भूमिगत क्रांतिकारी नेटवर्क में शामिल हुईं । [5] इस प्रकार, भागीदारी की प्रकृति बहुआयामी थी, और संघर्ष के विभिन्न चरणों में मुस्लिम जनता को प्रभावित करने और राष्ट्रवादी आंदोलनों को मजबूत करने में उनकी भागीदारी महत्वपूर्ण थी।

राष्ट्रवादी आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली प्रमुख मुस्लिम महिला नेताओं, कार्यकर्ताओं और क्रांतिकारियों की पहचान करना और उन्हें उजागर करना- इस लक्ष्य का उद्देश्य उन मुस्लिम महिलाओं की पहचान करना और उनका अभिलेखीकरण करना है जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महान नेता, कार्यकर्ता और क्रांतिकारी बनीं। सामान्य ऐतिहासिक साहित्य में उनका नाम नहीं लिया गया है या उन्हें शायद ही कभी चित्रित किया गया है। बेगम हज़रत महल, बी अम्मान (आबादी बानो बेगम), असगरी बेगम, जहाँआरा शाहनवाज़, अमजदी बानो बेगम, बेगम राना लियाकत अली खान, फ़ातिमा शेख और कई अन्य महत्वपूर्ण मुस्लिम महिला नेताओं ने राष्ट्रवादी राजनीति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कुछ ने सार्वजनिक प्रदर्शनों का नेतृत्व किया, कुछ ने मुस्लिम जनता को प्रेरित करने वाले शक्तिशाली भाषण दिए, जबकि अन्य ने भूमिगत गुप्त नेटवर्क और स्वतंत्रता सेनानियों का समर्थन किया। यह लक्ष्य राजनीतिक राय बनाने, संसाधन जुटाने और अपने समुदाय में औपनिवेशिक सत्ता और पितृसत्तात्मक ढांचे से लड़ने में इन महिलाओं की भूमिका की पहचान करने तक जाता है। ऐसे व्यक्तित्वों पर ज़ोर देकर, यह कार्य एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक शून्य को पूरा करता है और दर्शाता है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के व्यापक परिदृश्य में मुस्लिम महिलाओं का नेतृत्व एक तथ्य और प्रभाव था । [5]

© 2025 Suman Mor, Dr. Irfan Ahmed. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम महिला नेताओं का योगदान

क्रम संख्या	नाम	प्रमुख भूमिका / पहचान	योगदान / गतिविधियाँ	ऐतिहासिक महत्व
1	**बेगम हज़रत महल**	अवध की रानी, 1857 की क्रांति की नेता	1857 के विद्रोह में अंग्रेज़ों के विरुद्ध लखनऊ में सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व किया; ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी	प्रारंभिक महिला सैन्य नेतृत्व का प्रतीक; स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम मुस्लिम महिला योद्धा
2	**बी अम्मान (आबादी बानो बेगम)**	अली भाइयों की माता, खिलाफत आंदोलन की प्रेरक	1919-1920 में खिलाफत और असहयोग आंदोलनों में जनता को संबोधित किया; परदे के बावजूद बड़े जनसमूहों को प्रेरित किया	मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक भागीदारी का मार्ग प्रशस्त किया
3	**असगरी बेगम**	कार्यकर्ता और समाजसेविका	महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक सुधार के लिए कार्य किया; गांधीवादी आंदोलनों में सक्रिय रही	समाज सुधार और महिला जागरूकता की अग्रणी
4	**जहाँआरा शाहनवाज़**	अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की प्रमुख महिला नेता	गोलमेज सम्मेलन (1930) में भाग लिया; महिलाओं के मताधिकार और सामाजिक सुधार के लिए संघर्ष किया	भारतीय राजनीति में मुस्लिम महिलाओं की बौद्धिक उपस्थिति को स्थापित किया
5	**अमजदी बानो बेगम**	असहयोग आंदोलन की कार्यकर्ता, मौलाना मोहम्मद अली की पत्नी	असहयोग आंदोलन में सक्रिय; ब्रिटिश उत्पादों के बहिष्कार में हिस्सा लिया; जनता को संगठित किया	मुस्लिम महिलाओं की स्वतंत्रता के लिए प्रेरणा स्रोत बनीं
6	**बेगम राना लियाकत अली खान**	पाकिस्तान की प्रथम महिला, सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता	1940 के दशक में महिला सशक्तिकरण और सामाजिक कार्यों में भागीदारी; भारतीय स्वतंत्रता के दौरान सामाजिक संगठनों से जुड़ी रहीं	विभाजन काल में महिला संगठन निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान
7	**फ़ातिमा शेख**	शिक्षिका और सामाजिक सुधारक	सावित्रीबाई फुले के साथ मिलकर दलित एवं मुस्लिम बालिकाओं की शिक्षा के लिए पहला स्कूल खोला	भारत में महिला शिक्षा की अग्रणी और मुस्लिम समाज में प्रगतिशील परिवर्तन की प्रतीक
8	**बेगम अबिदा अहमद**	राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ता	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़ीं; महिला सशक्तिकरण और समाज सुधार के लिए कार्य किया	स्वतंत्र भारत में मुस्लिम महिलाओं के नेतृत्व की मिसाल
9	**बेगम सज्जाद ज़हीर (रज़िया सज्जाद)**	लेखिका और प्रगतिशील कार्यकर्ता	प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़ीं; महिलाओं की राजनीतिक चेतना और स्वतंत्रता की भावना को साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया	सांस्कृतिक-राजनीतिक विमर्श में महिला सशक्तिकरण की आवाज़
10	**बेगम हमीदा हबीबुल्लाह**	स्वतंत्रता सेनानी और समाजसेविका	असहयोग आंदोलन में भागीदारी; बाद में महिला शिक्षा और कल्याण संस्थानों से जुड़ीं	स्वतंत्रता के बाद सामाजिक नेतृत्व का उदाहरण बनीं

मुस्लिम महिलाओं द्वारा अपनाए गए विभिन्न संस्करणों, दृष्टिकोणों और रणनीतियों जैसे जन-आंदोलन, भूमिगत गतिविधियाँ, सार्वजनिक भाषण, धरना और धन उगाहना, की जाँच करना-

इस उद्देश्य का उद्देश्य स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मुस्लिम महिलाओं द्वारा अपनाई गई रणनीतियों, विधियों और भागीदारी के रूपों की विस्तृत श्रृंखला का विश्लेषण करना है ।[6] उनका योगदान केवल प्रतीकात्मक उपस्थिति तक सीमित नहीं था; बल्कि उन्होंने आंदोलन की आवश्यकताओं के अनुसार विविध कार्य-आधारित भूमिकाएँ अपनाईं ।[7] कई मुस्लिम महिलाओं ने खिलाफत और असहयोग के लिए समर्थन जुटाने हेतु उर्दू और हिंदुस्तानी में सार्वजनिक भाषण दिए। उन्होंने विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना देने, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने और खादी को बढ़ावा देने में सक्रिय रूप से भाग लिया। बी अम्मान जैसी महिलाओं ने धन उगाहने वाले अभियानों, कांग्रेस और राष्ट्रवादी गतिविधियों के लिए चंदा इकट्ठा करने में प्रमुख भूमिका निभाई। कई मुस्लिम महिलाएँ गुप्त भूमिगत नेटवर्क में भी सीधे तौर पर शामिल थीं, संदेश भेजती थीं, हथियार छिपाती थीं या क्रांतिकारियों को शरण देती थीं। उन्होंने अपने समुदाय के पुरुषों और महिलाओं को गांधीजी के सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित करके जन-आंदोलन में भाग लिया। इस प्रकार, यह उद्देश्य दर्शाता है कि मुस्लिम महिलाओं ने औपनिवेशिक शासन को चुनौती देने के लिए शांतिपूर्ण और जोखिम उठाने वाली,

© 2025 Suman Mor, Dr. Irfan Ahmed. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

दोनों ही रणनीतियों को अपनाया, जिससे राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी बहुमुखी और सक्रिय भूमिका सिद्ध हुई ।[8]

यह समझना कि मुसलमानों में सामाजिक सुधार, शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता ने सार्वजनिक राष्ट्रवादी राजनीति में मुस्लिम महिलाओं के उदय में कैसे योगदान दिया- यह उद्देश्य उस सामाजिक-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने का प्रयास करता है जिसने मुस्लिम महिलाओं को सार्वजनिक राष्ट्रवादी राजनीति में कदम रखने में सक्षम बनाया। 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के प्रारंभ में मुस्लिम समुदाय में कई बड़े सामाजिक सुधार आंदोलन हुए, जैसे सर सैयद अहमद खान, अलीगढ़ आंदोलन और मुमताज अली जैसे अन्य सुधारकों के तत्वावधान में स्थापित संगठनों द्वारा महिलाओं को शिक्षा देने का प्रयास ।[9] बालिका विद्यालयों के खुलने, उर्दू महिलाओं की पत्रिकाओं और महिला अधिकारों पर चर्चाओं से नई बौद्धिक चेतना का निर्माण हुआ। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि जैसे-जैसे लोग शिक्षित होते गए, राजनीतिक जागरूकता बढ़ती गई क्योंकि वे समाचार पत्र पढ़ने लगीं, अपने पड़ोस में सभाओं में जाने लगीं और घरों में राष्ट्रवाद पर बहसें सुनने लगीं। इन सभी कारकों ने शुरुआती बाधाओं को दूर किया और महिलाओं को देश के जीवन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। परिणामस्वरूप, मुस्लिम महिलाएं जन अभियानों में शामिल होने लगीं, गांधीवादी आंदोलनों का समर्थन करने लगीं और अपने परिवारों और समाज में राजनीतिक राय को आकार देने लगीं। इसलिए, इन सुधारों को समझना आवश्यक है, क्योंकि इस सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन के बिना, मुस्लिम महिलाएँ भारत के उपनिवेश-विरोधी संघर्ष में संगठित और मुखर भागीदार के रूप में उभर नहीं पातीं । [10]

स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए मुस्लिम महिलाओं को जिन बाधाओं और रुकावटों को पार करना पड़ा, जैसे सामाजिक पितृसत्ता, धार्मिक प्रतिबंध और औपनिवेशिक दमन, उनका मूल्यांकन करना- यह उद्देश्य उन प्रमुख बाधाओं का मूल्यांकन और समझ पर केंद्रित है जिनका सामना मुस्लिम महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में प्रवेश करने से पहले करना पड़ा। 19वीं और 20वीं शताब्दी के आरंभ में मुस्लिम समाज घोर पितृसत्तात्मक था और महिलाओं की गतिशीलता पर्दा प्रथा, लैंगिक भेदभाव और घरेलू कारावास जैसे सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंडों द्वारा प्रतिबंध लगाया गया था। कई रूढ़िवादी धार्मिक मान्यताओं ने महिलाओं को राजनीतिक गतिविधियों या सार्वजनिक भाषण देने से हतोत्साहित किया ।[11] इन आंतरिक प्रतिबंधों के अलावा, मुस्लिम महिलाओं को ब्रिटिश सरकार द्वारा निगरानी, गिरफ्तारी, कारावास, सेंसरशिप और शारीरिक धमकी के रूप में औपनिवेशिक दमन का भी सामना करना पड़ा। विरोध प्रदर्शनों या भूमिगत क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने पर अक्सर कड़ी सजा का जोखिम रहता था। इन सामाजिक और राजनीतिक बाधाओं के बावजूद, कई मुस्लिम महिलाओं ने पारंपरिक सीमाओं को तोड़ा और राष्ट्रीय गतिविधियों में शामिल होने के लिए आगे आईं। इसलिए, यह उद्देश्य मूल्यांकन करता है कि कैसे इन महिलाओं ने वर्चस्व के विविध रूपों – औपनिवेशिक शासन, पितृसत्ता, रूढ़िवादिता और सामाजिक दबावों – को चुनौती दी और फिर भी भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष में साहसपूर्वक योगदान दिया।

असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो जैसे गांधीवादी जन आंदोलनों में मुस्लिम महिलाओं के योगदान का मूल्यांकन करना- इस उद्देश्य का उद्देश्य महात्मा गांधी के नेतृत्व वाले प्रमुख गांधीवादी जन आंदोलनों जैसे असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में मुस्लिम महिलाओं के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष योगदान का मूल्यांकन करना है ।[12] इन आंदोलनों के दौरान, मुस्लिम महिलाओं ने खादी कातने, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने, विरोध प्रदर्शनों में शामिल होने, जनसभाओं में भाग लेने, घर-घर जाकर अभियान चलाने और कांग्रेस की गतिविधियों के लिए धन जुटाने में सक्रिय रूप से भाग लिया। कई मुस्लिम महिलाओं ने राष्ट्रवादी पर्चे बांटे, अन्य महिलाओं को सत्याग्रह में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया और राष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिए मुस्लिम जनता को संगठित करने में मदद की । [13] कुछ महिलाओं को उनकी भागीदारी और समर्थन के लिए गिरफ्तार किया गया, जेल भेजा गया और पुलिस निगरानी में रखा गया। ऐसे आंदोलनों में उनकी भागीदारी का विश्लेषण करने के माध्यम से, यह देखना लाभदायक है कि मुस्लिम महिलाएँ एक मज़बूत समर्थन आधार बनाने का माध्यम थीं, जिस पर गांधी ने अपनी अहिंसक जन राजनीति में भरोसा किया था, जो साबित करता है कि मुस्लिम महिलाएँ परिधीय दर्शक नहीं थीं, बल्कि वे लोग थीं जिन्होंने अपने परिवारों, समाज और सार्वजनिक स्तर पर राष्ट्रीय आंदोलन को प्रभावित किया।

मुस्लिम महिलाओं की भूमिका को एक संतुलित ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करना- और मुख्यधारा के इतिहासलेखन में मौजूद उन अंतरालों को पाटना, जो अधिकांश मामलों में अल्पसंख्यक महिलाओं की भूमिका को स्वीकार नहीं करते हैं। यह लक्ष्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में इस्लाम की महिलाओं के योगदान को एक उदार, वस्तुनिष्ठ और ऐतिहासिक रूप से सही ढंग से प्रतिबिंबित करना चाहता है ।[14] भारतीय इतिहास मुख्यधारा के भारतीय इतिहासलेखन का विषय रहा है जहाँ हिंदुओं के नेताओं को अल्पसंख्यक महिलाओं की तुलना में अधिक विद्वत्तापूर्ण स्थान दिया गया है, खासकर मुस्लिम महिलाओं को। इसने सुनिश्चित किया है कि अधिकांश मुस्लिम महिला स्वतंत्रता सेनानियों, कार्यकर्ताओं, लेखकों और आयोजकों को ऐतिहासिक पुस्तकों और राष्ट्रीय इतिहास में या तो अनदेखा कर दिया गया है या कम रिपोर्ट किया गया है। इसलिए, यह अध्ययन उनके वास्तविक योगदान, संघर्षों, बलिदानों और उपलब्धियों का दस्तावेजीकरण करके इस असंतुलन को ठीक करने का प्रयास करता है। इस तरह, यह शोध के एक महत्वपूर्ण अंतराल को भरने और मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी को ऐतिहासिक विश्लेषण के केंद्र में रखने का प्रयास करता है। यह लक्ष्य यह आश्वस्त करना संभव बनाता है कि मुस्लिम महिलाओं की भूमिका को गौण या कम महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण नहीं माना जाता है, बल्कि स्वतंत्रता की ओर पूरे भारतीय आंदोलन के हिस्से के रूप में माना जाता है ।[15]

शोध पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक ऐतिहासिक शोध पद्धति पर आधारित है, जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी से संबंधित अतीत की घटनाओं, दस्तावेजी साक्ष्यों और विद्वत्तापूर्ण कार्यों के संग्रह, विश्लेषण और व्याख्या पर केंद्रित है। इस शोध के लिए

© 2025 Suman Mor, Dr. Irfan Ahmed. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्राथमिक और द्वितीयक, दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में मुस्लिम महिला नेताओं के भाषण, संस्मरण, समकालीन समाचार पत्र, सरकारी अभिलेख, आत्मकथाएँ और प्रकाशित रूप में उपलब्ध अभिलेखीय सामग्री शामिल हैं। द्वितीयक स्रोतों में इतिहासकारों, महिला अध्ययन विद्वानों और सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा लिखित पुस्तकें, पत्रिका लेख, शोध प्रबंध और शोध पत्र शामिल हैं। शैक्षणिक विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए, केवल प्रामाणिक और समकक्ष-समीक्षित साहित्य का ही संदर्भ दिया गया है। अध्ययन की अवधि 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और 1947 में भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के बीच के समय को शामिल करती है। मुस्लिम महिला स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका, भागीदारी के रूपों, योगदान और बलिदान का अध्ययन करने के लिए विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है। स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों को राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरणों, जैसे खिलाफत, असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन, के अंतर्गत व्यवस्थित रूप से वर्गीकृत किया गया है। यह पद्धति उपनिवेश-विरोधी संघर्ष में मुस्लिम महिलाओं की भूमिका की आलोचनात्मक समझ और वस्तुनिष्ठ व्याख्या को सक्षम बनाती है।

अध्ययन की सीमाएँ

1. प्राथमिक स्रोतों की सीमित उपलब्धता: मुस्लिम महिला स्वतंत्रता सेनानियों के कई मूल भाषण, लेख और व्यक्तिगत दस्तावेज़ आसानी से उपलब्ध नहीं हैं, खो गए हैं, या ठीक से संरक्षित नहीं हैं।

2. मुख्यधारा के इतिहास में कम दस्तावेज़ीकरण: पारंपरिक इतिहासकारों ने हिंदू महिलाओं और पुरुष नेताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित किया, इसलिए मुस्लिम महिलाओं के बारे में जानकारी बिखरी हुई है और व्यवस्थित रूप से दर्ज नहीं की गई है।

3. द्वितीयक स्रोतों पर निर्भरता: प्रत्यक्ष प्राथमिक साक्ष्य के अभाव में, यह अध्ययन प्रकाशित पुस्तकों, पत्रिका लेखों और द्वितीयक साहित्य पर अधिक निर्भर रहा है।

4. कम-ज्ञात कार्यकर्ताओं की पहचान करने में कठिनाई: विरोध प्रदर्शनों और राष्ट्रवादी गतिविधियों में भाग लेने वाली कई सामान्य मुस्लिम महिलाओं के नाम कभी भी दर्ज नहीं किए गए, इसलिए उनके योगदान का पता नहीं चल पाया है।

5. राष्ट्रवादी लेखन पर औपनिवेशिक सेंसरशिप: ब्रिटिश अधिकारी अक्सर उर्दू अखबारों और राष्ट्रवादी पत्रिकाओं पर प्रतिबंध लगाते थे या उन्हें नष्ट कर देते थे, जिसके परिणामस्वरूप प्रासंगिक अभिलेख नष्ट हो जाते थे।

6. भाषाई बाधा: कुछ उपलब्ध स्रोत क्षेत्रीय भाषाओं (मुख्यतः उर्दू) में हैं, जो सभी शोधकर्ताओं के लिए सुलभ नहीं हो सकते हैं और उन्हें अनुवाद की आवश्यकता हो सकती है।

7. समय सीमा का परिसीमन: अध्ययन मुख्यतः 1857 से 1947 की अवधि पर केंद्रित है, इसलिए इस अवधि से पहले या बाद के योगदानों को इस शोध में शामिल नहीं किया गया है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन में किए गए ऐतिहासिक विश्लेषण से स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि मुस्लिम महिलाओं ने भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण, सार्थक और प्रेरक भूमिका निभाई। उनकी भागीदारी केवल प्रतीकात्मक समर्थन पर आधारित नहीं थी, बल्कि गांधीवादी जनांदोलनों और भूमिगत क्रांति में व्यावहारिक सक्रियता, राजनीतिक लामबंदी और प्रत्यक्ष कार्रवाई पर आधारित थी। 1857 में बेगम हज़रत महल से लेकर बीसवीं सदी में बी अम्मन, असगरी बेगम, जहाँआरा शाहनवाज़ और कई अन्य महिलाओं तक, मुस्लिम महिलाओं ने सार्वजनिक भाषणों, धन उगाहने, धरना, लेखन और जमीनी स्तर पर लामबंदी के माध्यम से निरंतर योगदान दिया। उन्होंने न केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध किया, बल्कि आंतरिक पितृसत्तात्मक सीमाओं और रूढ़िवादी परंपराओं का भी विरोध किया, जो उन्हें घरेलू दायरे तक ही सीमित रखने की कोशिश करती थीं। शिक्षा, सामाजिक सुधार और राजनीतिक जागृति ने मुस्लिम महिलाओं को राष्ट्र के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास कराया। यद्यपि मुख्यधारा के ऐतिहासिक लेखन में उनकी भूमिका को दरकिनार कर दिया गया है, यह शोधपत्र स्थापित करता है कि उन्होंने मुस्लिम समुदायों को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसलिए यह आवश्यक है कि भारतीय इतिहासलेखन में उनकी उपलब्धियों और बलिदानों को उचित सम्मान और मान्यता के साथ शामिल किया जाए।

संदर्भ

1. **फोर्ब्स, जेराल्डीन.** आधुनिक भारत में महिलाएँ. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस; 1997.
2. **गैल मिनॉल्ट.** एकांतप्रिय विद्वान: औपनिवेशिक भारत में महिला शिक्षा और मुस्लिम सामाजिक सुधार. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 1993.
3. **बारबरा डी. मेटकाफ.** ब्रिटिश भारत में इस्लामी पुनरुत्थान: देवबंद, 1860–1900. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस; 1982.
4. **बी. एन. पांडे.** भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन. टाटा मैकग्रा हिल; 1990.
5. **नीरा देसाई.** आधुनिक भारत में महिलाएँ. विकास प्रकाशन; 1987.

पत्रिका लेख

6. **मोहम्मद सज्जाद.** बिहार में राष्ट्रीय आंदोलनों में मुस्लिम अभिजात वर्ग और महिलाओं की भागीदारी. आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक. 2013.
7. **शहनाज़ खान.** औपनिवेशिक भारत में लिंग, इस्लाम और राष्ट्रवाद. दक्षिण एशियाई अध्ययन पत्रिका. 2006.
8. **एस. रॉय.** भारतीय राष्ट्रवाद में महिलाओं की भागीदारी की राजनीति. नारीवादी समीक्षा. 1996.
9. **मृणालिनी सिन्हा.** लिंग और राष्ट्र: भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाएँ. आधुनिक एशियाई अध्ययन. 2000.

कार्यवाही / रिपोर्ट

10. **भारतीय इतिहास कांग्रेस.** राष्ट्रवादी आंदोलन में मुस्लिम महिलाओं से संबंधित शोधपत्रों की कार्यवाही. विभिन्न वर्ष.
11. **भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार.** स्वतंत्रता आंदोलन अभिलेख. नई दिल्ली.

© 2025 Suman Mor, Dr. Irfan Ahmed. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

12. **भारत सरकार.** स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका पर रिपोर्ट. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय; 1948.

वेब स्रोत

13. **भारत का राष्ट्रीय पोर्टल.** महिला स्वतंत्रता सेनानी. 2024. उपलब्ध: www.india.gov.in
14. **प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी).** भारत की मुस्लिम महिला स्वतंत्रता सेनानी. 2023. उपलब्ध: www.pib.gov.in
15. **भारतीय संस्कृति पोर्टल (भारत सरकार).** बी-अम्मान और मुस्लिम महिला कार्यकर्ता. 2024. उपलब्ध: www.indianculture.gov.in

Creative Commons (CC) License
This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 Suman Mor, Dr. Irfan Ahmed. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/